प्रथमानुयोग

अध्याय 1.

महामन्त्र णमोकार

णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं॥

1. **मन्त्र किसे कहते हैं ?**
   1. जिसमें अनन्त शक्ति और अनन्त अर्थ विद्यमान रहता है, उसे मन्त्र कहते हैं।
   2. जिसका पाठ करने मात्र से कार्य की सिद्धि होती है, उसे मन्त्र कहते हैं।
2. **णमोकार मन्त्र किसे कहते हैं, यह किस भाषा एवं किस छंद में लिखा गया है ?**
   जिस मन्त्र में पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया हो, वह णमोकार मन्त्र है। यह प्राकृत भाषा एवं आर्या छंद में लिखा गया है।
3. **इस मन्त्र में किसी व्यक्ति विशेष को नमस्कार क्यों नहीं किया ?**
   इस मन्त्र में व्यक्ति विशेष को नहीं अपितु गुणों से युक्त जीवों को नमस्कार किया है, क्योंकि जैनदर्शन की यह विशेषता है कि इसमें व्यक्ति विशेष को नहीं बल्कि व्यक्तित्व को नमस्कार किया जाता है।
4. **इस णमोकार मन्त्र की रचना किसने की ?**
   इस मन्त्र की रचना किसी ने भी नहीं की, यह अनादिनिधन मन्त्र है, अर्थात् यह अनादिकाल से है और अनन्तकाल तक रहेगा।
5. **णमोकार मन्त्र को सर्वप्रथम किस आचार्य ने किस ग्रन्थ में लिपिबद्ध किया था ?**
   णमोकार मन्त्र को आचार्य श्री पुष्पदन्तजी महाराज ने षट्खण्डागम ग्रन्थ के प्रथम खण्ड में मङ्गलाचरण के रूप में द्वितीय शताब्दी में लिपिबद्ध किया था।
6. **णमोकार मन्त्र के पर्यायवाची नाम बताइए ?**
   1. **अनादिनिधन मन्त्र** - यह मन्त्र शाश्वत है, न इसका आदि है और न ही अंत है।
   2. **अपराजित मन्त्र** - यह मन्त्र किसी से पराजित नहीं हो सकता है।
   3. **महा मन्त्र** - सभी मन्त्रों में महान् अर्थात् श्रेष्ठ है।
   4. **मूल मन्त्र** - सभी मन्त्रों का मूल अर्थात् जड़ है, जड़ के बिना वृक्ष नहीं रहता है, इसीप्रकार इस मन्त्र के अभाव में कोई भी मन्त्र टिक नहीं सकता है।
   5. **मृत्युंजयी मन्त्र** - इस मन्त्र से मृत्यु को जीत सकते हैं अर्थात् इस मन्त्र के ध्यान से मोक्ष को भी प्राप्त कर सकते हैं।
   6. **सर्वसिद्धिदायक मन्त्र** -इस मन्त्र के जपने से सभी ऋद्धि-सिद्धि प्राप्त हो जाती हैं।
   7. **तरणतारण मन्त्र** - इस मन्त्र से स्वयं भी तर जाते हैं और दूसरे भी तर जाते हैं।
   8. **आदि मन्त्र** - सर्व मन्त्रों का आदि अर्थात् प्रारम्भ का मन्त्र है।
   9. **पञ्च नमस्कार मन्त्र** -इसमें पाँचों परमेष्ठियों को नमस्कार किया गया है।
   10. **मङ्गल मन्त्र** - यह मन्त्र सभी मङ्गलों में प्रथम मङ्गल है।
   11. **केवलज्ञान मन्त्र**-इस मन्त्र के माध्यम से केवलज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

7. णमोकार मन्त्र से कितने मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है ?

इस मन्त्र से चौरासी लाख मन्त्रों की उत्पत्ति हुई है।

8. णमोकार मन्त्र कहाँ-कहाँ पढ़ना चाहिए ?

दु:ख में, सुख में, डर के स्थान में, मार्ग में, भयानक स्थान में, युद्ध के मैदान में एवं कदम-कदम पर णमोकार मन्त्र का जाप करना चाहिए। यथा-

दु:खे-सुखे भयस्थाने, पथि दुर्गे रणेऽपि वा।
श्री पञ्चगुरु मन्त्रस्य, पाठ: कार्य: पदे-पदे ॥ (णमोकार मन्त्र माहात्म्य, 12)

9. क्या अपवित्र स्थान में णमोकार मन्त्र का जाप कर सकते हैं ?

यह मन्त्र हमेशा सभी जगह स्मरण कर सकते हैं, पवित्र व अपवित्र स्थान में भी, किन्तु जोर से उच्चारण पवित्र स्थानों में ही करना चाहिए। अपवित्र स्थानों में मात्र मन में ही पढ़ना चाहिए। कहा भी है -

अपवित्र: पवित्रोऽवा सुस्थितो दु:स्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पञ्च नमस्कारं, सर्वपापै: प्रमुच्यते॥ (पूजा पीठिका)

10. क्या सभी जगह णमोकार मन्त्र जपने से एक सा फल मिलता है ?

नहीं।

गृहे जपफलं प्रोक्तं वने शतगुणं भवेत्।
पुण्यारामे तथारण्ये सहस्रगुणितं मतम्॥
पर्वते दशसहस्रं च नद्यां लक्षमुदाहृतं।
कोटि देवालये प्राहुरनन्तं जिनसन्निधौ॥ (णमोकारमन्त्र कल्प, पृ.105)

अर्थ -घर में मन्त्राराधना करने से एक गुणा, वन में सौ गुणा, बगीचे तथा सघन वन में हजार गुणा, पर्वत पर दस हजार गुणा, नदी पर लाख गुणा और जिनेन्द्र देव के समक्ष अनन्त गुणा फल मिलता है। अत: कार्यसिद्धि के लिए मन्त्राराधना देवालय या जिनेन्द्र देव के समक्ष करना ही श्रेष्ठ है।

11. प्रयोग के द्वारा णमोकार मन्त्र कैसे श्रेष्ठ हुआ ?

ग्वालियर में णमोकार मन्त्र का अनुष्ठान हुआ, कोटि मन्त्र का जाप हुआ, वहाँ पर णमोकार मंत्र की श्रेष्ठता देखने के लिए दो गमलों में दो पौधे रोपे गए एक पौधे के लिए साधारण जल प्रतिदिन डाला जाता था और दूसरे पौधे पर मन्त्र से मंत्रित जल डाला जाता था। कुछ दिनों बाद देखा गया कि मन्त्रों से मंत्रित जल जिस पौधे पर डाला जाता था, वह पौधा बड़ी तेजी से विकसित हो रहा था। जिसमें सामान्य जल डाला जा रहा था, उसके बढ़ने की स्थिति बहुत कम थी।

12. णमोकार मन्त्र में कितने पद, अक्षर, मात्राएँ, व्यञ्जन एवं स्वर होते हैं ?

णमो अरिहंताणं	प्रथम पद	7 अक्षर	11 मात्राएँ	6 व्यञ्जन	6 स्वर
णमो सिद्धाणं	द्वितीय पद	5 अक्षर	9 मात्राएँ	5 व्यञ्जन	5 स्वर
णमो आइरियाणं	तृतीय पद	7 अक्षर	11 मात्राएँ	5 व्यञ्जन	7 स्वर
णमो उवज्झायाणं	चतुर्थ पद	7 अक्षर	12 मात्राएँ	6 व्यञ्जन	7 स्वर
णमो लोए सव्वसाहूणं	पञ्चम पद	9 अक्षर	15 मात्राएँ	8 व्यञ्जन	9 स्वर
	कुल 5 पद	35 अक्षर	58 मात्राएँ	30 व्यञ्जन	34 स्वर

नोट - (1) स्वर सहित व्यञ्जन को ही यहाँ गिनना है।

जैसे-णमो अरिहंताणं में, ण, मो, रि, ह, ता, ण = 6 इसी प्रकार आगे भी।

(2) 35 अक्षर किन्तु स्वर 34 हैं। मन्त्र शास्त्र के अनुसार णमो अरिहंताणं पद में अ का लोप हो जाता है।

मात्रा गिनना - । = एक (लघु) ऽ = दो (गुरु)

ण	मो	अ	रि	हं	ता	णं				
।	ऽ	।	।	ऽ	ऽ	ऽ			=	11
ण	मो	सिद्	धा	णं						
।	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ					=	9
ण	मो	आ	इ	रि	या	णं				
।	ऽ	ऽ	।	।	ऽ	ऽ			=	11
ण	मो	उ	वज्ज	झा	या	णं				
।	ऽ	।	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ			=	12
ण	मो	लो	ए	सव्व	सा	हू	णं			
।	ऽ	ऽ	।	ऽ	।	ऽ	ऽ	ऽ	=	15
									कुल =	58

नोट - प्राकृत भाषा में ए, ऐ, ओ, औ, ह्रस्व, दीर्घ एवं प्लुत तीनों भेद होते हैं।

(श्री धवला पु. 13/45/ 247) अतः लोए में ए को ह्रस्व मानने से 58 मात्राएँ होंगी।

13. परमेष्ठियों के वाचक मन्त्र कितने-कितने अक्षर वाले हैं ?

पणतीस सोल छप्पण चदुदुगमेगं च जवहज्झाएह।
परमेट्ठिवाचयाणं अण्णं च गुरूवएसेण॥ (द्रव्यसंग्रह, 49)

अर्थ - परमेष्ठियों के वाचक 35, 16, 6, 5, 4, 2 और 1 अक्षर के मन्त्रों को जपो और ध्यान करो तथा गुरु के उपदेश के अनुसार अन्य भी मन्त्रों को जपो और ध्यान करो। 35 अक्षर वाला मन्त्र तो आप ऊपर पढ़ चुके हैं। आगे 16 अक्षर वाला-अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यो नमः या अरिहन्त सिद्ध आइरिया उवज्झाया साधु।

6 अक्षर वाला मन्त्र - अरिहंत सिद्ध और अरिहंत साधु।

5 अक्षर वाला - असिआउसा और नमः सिद्धेभ्यः।

4 अक्षर वाला - अरिहन्त और असिसाहू।

2 अक्षर वाला - सिद्ध और अर्हं।

1 अक्षर वाला - अ, ओम् , ह्रीं, श्रीं, ह्वीं और ह्रीं।

14. 'ओम्' शब्द में पञ्च परमेष्ठी किस प्रकार गर्भित हो जाते हैं ?

'ओम्' में पाँच परमेष्ठियों के नाम के प्रथम अक्षर हैं कहा भी है-

अरहंता असरीरा आइरिया तह उवज्झया मुणिणो।
पढमक्खरणिप्पण्णो ओंकारो पञ्च परमेट्ठी॥ (द्रव्यसंग्रह टीका 49)

अर्थ - अरिहंत का 'अ', सिद्ध का अपर नाम अशरीरी का 'अ', आचार्य का 'आ', उपाध्याय का 'उ' और साधु का अपर नाम मुनि का 'म्', इस प्रकार अ + अ + आ + उ + म् इन सब अक्षरों की सन्धि कर

देने से 'ओम्' बना। 'ओम्' की आकृति ॐ[1] भी लिखी जाती है।

15. णमोकार मन्त्र 9 बार या 108 बार क्यों जपते हैं ?

9 का अङ्क शाश्वत है, उसमें कितनी भी संख्या का गुणा करें और गुणनफल को आपस में जोड़ने से 9 ही रहता है। जैसे 9×3 =27 (2+7=9) अतः शाश्वत पद पाने के लिए 9 बार पढ़ा जाता है। कर्मों का आस्रव 108 द्वारों से होता है, उसको रोकने हेतु 108 बार णमोकार मन्त्र जपते हैं। प्रायश्चित्त में 27 या 108 श्वासोच्छ्वास के विकल्प में 9 बार या 27 बार णमोकार मन्त्र पढ़ सकते हैं।

16. णमोकार मन्त्र को श्वासोच्छ्वास में किस प्रकार पढ़ते हैं ?

णमोकार मन्त्र को तीन श्वासोच्छ्वास में पढ़ते हैं। श्वास ग्रहण करते समय णमो अरिहंताणं, श्वास छोड़ते समय णमो सिद्धाणं, पुनः श्वास ग्रहण करते समय णमो आइरियाणं, श्वास छोड़ते समय णमो उवज्झायाणं और अंत में पुनः श्वास लेते समय णमो लोए एवं श्वास छोड़ते समय सव्वसाहूणं बोलना चाहिए।

17. जाप करने की कौन-कौन सी विधियाँ हैं ?

जाप करने की तीन विधियाँ हैं- कमल जाप, हस्ताङ्गुली जाप और माला जाप।

1. **कमल जाप विधि** :-अपने हृदय में आठ पाँखुड़ियों के एक श्वेत कमल का विचार करें। उसकी प्रत्येक पाँखुड़ी पर पीतवर्ण के बारह-बारह बिन्दुओं की कल्पना करें तथा मध्य की गोलवृत्त-कर्णिका में बारह बिन्दुओं का चिन्तन करें। इन 108 बिन्दुओं के प्रत्येक बिन्दु पर एक-एक मन्त्र का जाप करते हुए 108 बार इस मन्त्र का जाप करें।

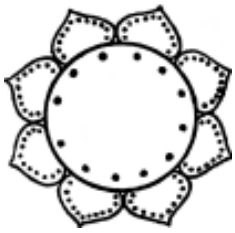

2. **हस्ताङ्गुली जाप विधि** :- अपने हाथ की अङ्गुलियों पर जाप करने की प्रक्रिया यह है कि - मध्यमा अङ्गुली के बीच के पोर से इस मन्त्र को प्रारम्भ कर, फिर उसी अङ्गुली के ऊपरी पोर पर चलते हुए, फिर तर्जनी के ऊपरी पोर से, नीचे के पोर पर उतरते हुए, तीसरे पोर से, पुनः मध्यमा के नीचे के तीसरे पोर होते हुए,अनामिका अङ्गुली के अन्तिम पोर से ऊपर की ओर चलते हुए, अन्तिम पोर तक पहुँचना चाहिए। इस प्रकार नौ-नौ बार मन्त्र जपते हुए, बारह बार में 108 बार होते हैं, तब पूरी जाप होती है।
3. **माला जाप** -108 दाने की माला द्वारा जाप करें। (मङ्गलमन्त्र णमोकार एक अनुचिन्तन, पृ. 72-74)

18. मन्त्रोच्चारण जाप एवं ध्यान किस दिशा में करना चाहिए ?

मन्त्रोच्चारण जाप एवं ध्यान के लिए पूर्व एवं उत्तर मुख होने को शुभ बताया है क्योंकि प्रत्येक दिशा का अलग-अलग फल है।

पूर्व	-	मोहान्तक (मोह का नाश करने वाली है।)
दक्षिण	-	प्रज्ञान्तक (प्रज्ञा अर्थात् बुद्धि का नाश करने वाली है।)
पश्चिम	-	पद्मान्तक (हृदय की भावनाओं को नष्ट करने वाली है।)
उत्तर	-	विघ्नान्तक (विघ्नों का नाश करने वाली है।)

19. आचार्यों ने उच्चारण के आधार पर मन्त्र जाप कितने प्रकार से कहा है ?

1. जैनधर्म से सम्बन्धित 'ओम्'

चतुर्विधा हि वाग्वैखरी मध्यमा पश्यन्ती सूक्ष्माश्चेति। (तत्त्वानुशासन, पृ. 66)

1. **वैखरी** -जोर-जोर से बोलकर णमोकार मन्त्र का जाप करना जिसे दूसरे लोग भी सुन लें।
2. **मध्यमा**-इसमें होठ नहीं हिलते किन्तु अन्दर जीभ हिलती रहती है।
3. **पश्यन्ति** - इसमें न होठ हिलते हैं और न जीभ हिलती है, इसमें मात्र मन में ही चिन्तन करते हैं।
4. **सूक्ष्म**-मन में जो णमोकार मन्त्र का चिन्तन था वह भी छोड़ देना सूक्ष्म जाप है। जहाँ उपास्य उपासक का भेद समाप्त हो जाता है। अर्थात् जहाँ मन्त्र का अवलम्बन छूट जाए वो ही सूक्ष्म जाप है।

20. णमोकार मन्त्र व्रत के कितने उपवास किए जाते हैं ?

णमोकार मन्त्र व्रत के 35 उपवास किए जाते हैं।

21. इस व्रत में कौन-कौन सी तिथि में कितने-कितने उपवास किए जाते हैं ?

इस व्रत में पञ्चमी के 5, सप्तमी के 7, नवमी के 9 तथा चौदस के 14 उपवास किए जाते हैं।

22. यह व्रत कब प्रारम्भ किया जाता है ?

आषाढ़ शुक्ल सप्तमी से या किसी भी माह की पञ्चमी, सप्तमी, नवमी या चौदस से प्रारम्भ किया जाता है।

23. इस मन्त्र का क्या प्रभाव है ?

यह पञ्च नमस्कार मन्त्र सभी पापों का नाश करने वाला है तथा सभी मङ्गलों में प्रथम मङ्गल है। यथा-

एसो पञ्च णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मङ्गलाणं च सव्वेसिं पढमं होई मङ्गलं ॥

मङ्गल शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया जाता है।

मङ्ग=सुख। ल = लाति, ददाति, जो सुख को देता है, उसे मङ्गल कहते हैं।

मङ्गल-मम् =पापं। गल =गालयतीति=अर्थात् जो पापों को गलाता है, नाश करता है, उसे मङ्गल कहते हैं।

लौकिक मङ्गल में-कन्या, पीले सरसों, हाथी, जल से भरे कलश, दूध पीता बछड़ा आदि शुभ हैं।

पारलौकिक मङ्गल में-अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय एवं साधु परमेष्ठी शुभ हैं।

24. णमोकार मन्त्र की क्या महिमा है ?

यह मन्त्र सभी मन्त्रों का राजा माना जाता है, इसके स्मरण से पूर्वोपार्जित कर्म नष्ट हो जाते हैं, जिससे अनेक प्रकार के शारीरिक, मानसिक कष्ट दूर हो जाते हैं। सिंह, सर्प आदि भयंकर जीवों का भय नहीं रहता है। भूत, व्यंतर आदि भाग जाते हैं। हलाहल विष भी अपना असर त्याग देता है। इस मन्त्र के सुनने मात्र से अनेक जीवों ने उच्च गति एवं विद्यायों को प्राप्त किया था। जिसके अनेक उदाहरण शास्त्रों में आते हैं।

जैसे -

1. पद्मरुचि सेठ ने बैल को णमोकार मन्त्र सुनाया तो वह सुग्रीव हुआ था।
2. रामचन्द्रजी ने जटायु पक्षी को णमोकार मन्त्र सुनाया तो वह स्वर्ग में देव हुआ था।
3. जीवन्धरकुमार ने कुत्ते को णमोकार मन्त्र सुनाया तो वह यक्षेन्द्र हुआ।
4. अञ्जनचोर ने णमोकार मन्त्र पर श्रद्धा रखकर आकाशगामी विद्या को प्राप्त किया।

25. णमोकार मन्त्र की महिमा का कोई दूसरा दृष्टान्त बताइए ?

आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज एक शहर से गुजर रहे थे। एक मुस्लिम भाई का मात्र एक बेटा था। उस बेटे को सर्प ने काट लिया था। जिसे उस शहर के जो भी तन्त्रवादी, मन्त्रवादी थे, सब उसके बेटे का इलाज कर चुके थे। लेकिन उसका जहर नहीं उतार पाए। अकस्मात् आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज उस रास्ते से गुजर रहे थे। उनको देख मुस्लिम भाई ने उनके पैर पकड़ लिए और कहने लगा, आप पहुँचे हुए फकीर हैं,आपके पास जरूर कोई मन्त्र सिद्धि है। कृपया मेरे बेटे का जहर उतार दीजिए। मेरा यह इकलौता बेटा है, मैं आपका जन्म भर उपकार मानूँगा। आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज श्रेष्ठ साधक थे। उनके पास सिद्धियाँ थीं। उन्होंने तुरन्त अपने कमण्डलु से जल लेकर मंत्रित किया और उसके ऊपर छींटा तो वह बेटा ठीक हो गया।

26. मन्त्रों में और भी कोई चमत्कारिक शक्तियाँ हैं ?

मन्त्रों में अनेक चमत्कारिक शक्तियाँ हैं। जिनसे महाशक्तिशाली देवों को भी वश में किया जाता है। वर्षा, तूफान आदि को भी रोका जाता है और गारुड़ी मन्त्र तो सर्प-विष दूर करने में जगत् प्रसिद्ध है।

27. चत्तारि दण्डक में आचार्य, उपाध्याय क्यों नहीं लिए ?

आचार्य और उपाध्याय विशेष पद हैं, जो कि संघ के संचालन हेतु दीक्षा, प्रायश्चित्त और शिक्षा आदि की अपेक्षा निश्चित किए हैं। अतः इन्हें साधु परमेष्ठी में ही गर्भित किया है।

28. णमोकार मन्त्र के उच्चारण करने से कितने सागर के पाप कट जाते हैं ?

णमोकार मन्त्र के एक अक्षर का भी भक्ति पूर्वक नाम लेने से सात सागर के पाप कट जाते हैं, पाँच अक्षरों का पाठ करने से पचास सागर के पाप कट जाते हैं तथा पूर्ण मन्त्र का उच्चारण करने से पाँच सौ सागर के पाप कट जाते हैं। (तत्त्वानुशासन, उद्धृत 63)

अभ्यास

सही या गलत बताइए -

1. णमोकार मन्त्र को एक परमेष्ठी ने लिपिबद्ध किया था।
2. घर में मन्त्र आराधना नहीं करना चाहिए।
3. तीन अक्षर वाला मन्त्र भी हो सकता है।
4. ओम् में चार परमेष्ठी भी गर्भित हो सकते हैं।
5. दक्षिण दिशा में मन्त्र जपने से बुद्धि बढ़ती है।
6. मन्त्र सुनने से सुग्रीव बैल बना था।

अन्यत्र खोजिए -

1. णमोकार मन्त्र कहाँ अर्थात् किस नगर में लिखा था ? इसमें भी 2 मत हैं।
2. णमोकार मन्त्र में दूसरे प्रकार से भी 58 मात्राएँ होती हैं।
3. 3, 10 और 13 अक्षर वाले मन्त्र खोजिए।
4. णमो आइरियाणं पाठ में क्या बाधा आइगी।
5. णमोकार मन्त्र का जप करना सबसे बड़ा स्वाध्याय है, ऐसा किस आचार्य ने किस ग्रन्थ में कहा है ?
6. णमोकार मन्त्र की अविनय करने से कौन दुर्गति को प्राप्त हुआ था ?
7. णमोकार मन्त्र से असंख्यात गुणी कर्म की निर्जरा होती है। ऐसा कौन से आचार्य ने कहा है ?